इन्दौर में आचार्य श्री 108 विशुद्धसागर जी का भव्य मंगल प्रवेश

संजय जैन, इन्दौर । 2 जुलाई को आचार्यश्री 108 विशुद्धसागरजी संसघ का आगमन माणिक चौक मंदिर से भव्य शोभा यात्रा के साथ श्री दिगम्बर जैन समवशरण मंदिर, कंचन बाग में हुआ। इन्दौर की पावन धरा पर एक और इतिहास रचा गया। सुबह ऐलाचार्य 108 निजानंदसागरजी से मिलन पश्चात एलाचार्य जी और आचार्य संसघ माणिक चौक से राजबाड़ा की ओर विहार कर रहे थे । शोभायात्रा में समाज के प्रत्येक संगठन ने अपना सहयोग दिया । समस्त कालोनियों के महिला मंडल व दिव्यघोष मंडल, रथ, हाथी, कई बैंडो बाजों के साथ शोभा यात्रा को भव्य बना रहे थे । आचार्य संघ श्रद्धालुओं को आशीर्वाद देते चल रहे थे । 7 बजे से प्रारंभ शोभा यात्रा 10 बजे समवशरण मंदिरजी पहँची । जहां गुरूदेव और एलाचार्यजी का पाद प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किया गया। गणाचार्य 108 श्री विरागसागरजी के चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन पश्चात गुरुजनों के मंगल प्रवचन हुए । आपने कहा कि हम जो भी सोंचे, अच्छा सोंचे । उसमें सभी के कल्याण का भाव हो । चातुर्मास में अच्छे संकल्प ले और उसे पूर्ण करें । विश्व के सारे दर्शन मौन हो जाते है जहाँ महावीर का दर्शन काम करता है। सारे मंगल शून्य हो जाते है जहां भाव मंगल काम कर देता है, जब भी मोक्ष होगा भाव मंगल से होगा। मुनिश्री ने इसी कड़ी में कहा कि हे जीव!! जैसे इत्र बेचने वाला गली में निकल जाये तो पूरी गली महक जाती है वैसे ही जब निर्ग्रन्थ मुनि जिस गली से निकले तो तुम उनके दर्शन कर लेना, तुम उनको देखकर मुनि बन पाओ या न बन पाओ लेकिन वे जिस गली से निकले वह रत्नत्रय की सुगंध से महक जाये ।

गोलालारीय समाज का यह सौभाग्य है कि आचार्यश्री संघ में समाज के दो मुनिराज 108 मुनिश्री आस्तिक्य सागरजी व 108 मुनिश्री प्रणितसागरजी महाराज का पावन सानिध्य पाकर गोलालारीय समाज गौरवांवित महसूस कर रहा है ।

सांगानेर की पावन धरा पर जन आस्था का महाकुम्भ

राकेश जैन डब्ल्यू, ललितपुर । श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र, संघीजी मंदिर सांगानेर की ओर से ब्रह्म मुहूर्त से ही श्रद्धालु पहुंचना शुरु हो गये थे, जो धीरे धीरे यह क्रम वृहद मेले के रुप में परिवर्तित हो गया । अवसर था 18 वर्ष बाद मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराज द्वारा यक्ष रक्षित जिन प्रतिमाओं के भूगर्भ से निकालने का ।

सांगानेर में महाकुम्भ मेला – प्रात: 4 बजे से ही मंदिर के बाहर बने विशाल पाण्डाल में श्रावक श्राविकाओं का पहुंचना शुरु हो गया और 8 बजे तक तो चारों ओर केसरिया वस्त्र पहने महिलाएं एवं श्वेत वस्त्रधारी पुरुष नजर आ रहे थे । मंदिर के अंदर व बाहर श्रद्धालु सांगानेर वाले बाबा, भगवान आदिनाथ, संत शिरोमणि आचार्यश्री विद्यासागरजी महाराज व मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज का जयघोष वातावरण को धर्ममय बना रहे थे । लगभग 9 बजे के आसपास यह घोषणा हुई कि मुनि पुंगव श्री सुधासागरजी महाराज यक्ष रक्षित जिन प्रतिमाओं के साथ पाण्डाल में आ रहे हैं तो चारों ओर जयकारों से वातावरण मंत्रमुग्ध हो गया । इस बार जिन बिम्ब मुनिश्री गुफा से लेकर आये थे ।

गुफा का रहस्य – मुनि पुंगव सुधासागरजी महाराजजी तलघर से यक्षरक्षित जिनालय को निकालने के क्रम में पिछले दिनो से मुनि संघ के साथ साधनारत थे । प्रात: 8 बजे मुनिश्री संघीजी मंदिर के तलघर के द्वार पर पहुंचे तथा प्रार्थना की और फिर भूगर्भ में उतरे । उन्होंने वहां भगवान की आराधना कर संकल्पबद्ध होकर 25 जून तक के लिये यक्ष रक्षित जिन प्रतिमाओं के बाहर लाने की विधि पूर्ण की । मुनिश्री ने गुफा का रहस्य बताते हुए कहा कि वहां पर आक्सीजन की बहुत कमी है । मेरी हालत अर्द्ध चेतना जैसी हो गयी थी जैसे कि कोई वेंटीलेटर पर रहता हो, दलदल भी पिछली बार की अपेक्षा अधिक मिला और गुफा में जिस ओर पिछली बार मुझे नागराज मिले थे उस ओर मैं गया ही नहीं क्योंकि हमारी भी मर्यादा है । इस बार मूर्तियों के अलावा वहां मुझे बहुत सारे प्राचीन ताम्रपत्र मिले हैं जिनके पढ़ने के बाद और रहस्यों के बारे में पता चलेगा । मुनिश्री ने कहा कि भूगर्भ से यक्षरक्षित जिन प्रतिमाओं को निकालने से पहले तीन बातों का ध्यान रखना आवश्यक था सर्वप्रथम मूलनायक भगवान आदिनाथ सांगानेर वाले बाबा के विश्वासपात्र बनो । दूसरी बात मंदिर कमेटी को विश्वास में लो कि जो साधु मूर्ति निकाले वो गुफा की मर्यादाओं का ध्यान रखे और तीसरा वह निर्देश साधना और तपस्या में निपुण हो। मुनिश्री ने कहा कि अगर कोई दादागिरी से गुफा में प्रवेश कर भी गया तो वह लौटकर वापस नहीं आ पायेगा । घंटो से इंतजार कर रहे श्रावक श्राविकाओं ने जैसे ही यक्षरक्षित जिन प्रतिमाओं के दर्शन किए तो वह भाव विभोर हो उठे और दोनों हाथ ऊंचे करके जयकारे लगाये । एक से एक भव्य नवरत्नों की प्रतिमाएं सबसे विशाल आदिनाथ भगवान की मूर्ति और अन्य मूर्तियों की बनावट ऐसी थी मानों हर श्रद्धालु दिल में न भूलने वाली स्मृति में रख लेने को आतुर थे। दिनांक 19 से 25 जून तक हजारों श्रावकों ने नवरत्न प्रतिमाओं का अभिषेक करा व लाखों श्रावकों ने दर्शन कर अपने आप को पुण्यशाली मानकर इस अद्वितीय प्रतिमाओं की छबि को सदा के लिए मन में संजो लिया ।

युगप्रतिक्रमण महामहोत्सव सानंद संपन्न ।

राजेश जैन, बीड़ीवाले, झांसी । भगवान पार्श्वनाथ स्वामी के अतिशयकारी तीर्थ करगुवांजी झांसी में 14 से 25 मई तक हर्षोल्लासपूर्वक संपन्न हुआ। प्रतिदिन अनेक आयोजनों के साथ आचार्यश्री के मंगल आशींवचन का श्रद्धालुओं ने लाभ उठाया ।

युगप्रतिक्रमण प्रवर्तक गणाचार्य श्री 108 विरागसागरजी महाराज एवं युगप्रतिक्रमण निर्देशक आचार्यश्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज के पावन सानिध्य में पूर्ण क्रियाओं के साथ संपन्न हुआ ।

भव्य ऐतिहासिक मंच तीर्थंकर परमात्मा के समवशरण की रचना बनी हुई थी। मुख्य उच्च आसन पर गणाचार्य श्री 108 विरागसागर जी विराजमान थे। उनके सामने मंच पर प्रथम पंक्ति में आचार्य विशुद्धसागर सहित 4 आचार्य विराजमान थे। लगभग 185 पिच्छियां थी, मंच पर दाएं में सभी मुनिवर, ऐलक, क्षुल्लक विराजमान थे, बाएं में माताजी थी । मंच के सामने एक विशिष्ठ घेरे में सभी ब्रम्हचारी भाई बहिनें बैठे हुए थे । अगले घेरे में सफेद कुर्ता पायजामा पहने हुए श्रावक थे, फिर अन्य श्रावक मौजूद थे। दोपहर 3 से 7 बजे तक 4 घंटे का प्रतिक्रमण चला । करीब 25,000 लोगों ने एक साथ युग प्रतिक्रमण किया। गणाचार्य श्री विरागसागरजी ने सर्वप्रथम युगप्रतिक्रमण का पूरा अर्थ बताते हुए सभी को उतने समय के लिए संकल्पबद्ध किया। जीवन भर में आज तक हुए अपराधों की क्षमा मांगने के लिए कहा। सभी को खड़े करवाकर चारों दिशाओं में 3 आवर्त 1 शिरोनति करवाते हुए पांच परमेष्टि को नमस्कार करवाया । गणाचार्यजी हिंदी में भावार्थ भी समझाते जा रहे थे जिससे कि सभी श्रावक प्रतिक्रमण के अर्थ और मर्म को समझते हुए एकाग्रता से सुन रहे थे। 25 मई को समापन दिवस की भव्य शोभा यात्रा में समाजजनों ने उत्साह पूर्वक भाग लेकर बुन्देलखंड में इतिहास रच डाला ! जिसे कई वर्षों तक याद रखा जाएगा । महोत्सव समिति के अध्यक्ष पूर्व सांसद प्रदीप जैन 'आदित्य', कार्याध्यक्ष राजीव जैन व महामंत्री श्री प्रवीण जैन 'दैनिक विश्व परिवार' ने समारोह में भाग लेने वाले व सहयोग देने वाले सदस्यों का आभार प्रकट कर यशस्वी जीवन की शुभकामनाएं व्यक्त की ।

पृथ्वीपुर में पंचकल्याणक सानंद संपन्न

नवीन जैन, पृथ्वीपुर । परम पूज्य दिगम्बर जैन आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के ज्ञान - ध्यानतप से सिंचित एवं चरण रज से पवित्र मध्यभारत की हृदय स्थली बुन्देलखण्ड के टीकमगढ़ जिले के विश्व पर्यटक स्थल ओरछा के रामीपस्थ राधासागर से सुसज्जित ऐतिहासिक नगरी पृथ्वीपुर में आचार्य श्री 108 विद्यासागर जी महाराज की स्वर्णिम संयमोत्सव वर्ष के सुअवसर पर उन्हीं के पावन आशीर्वाद से एवं उन्हीं के आज्ञानुवर्ती शिष्य पूज्य मुनि श्री 108 अजितसागर जी महाराज एवं मुनि श्री 108 सुव्रतसागर जी महाराज, श्रद्धेय ऐलक श्री दयासागर जी एवं ऐलक श्री विवेकानंदसागर जी महाराज क ससंघ पावन सान्निध्य में एवं बा.ब्र. अशोक भैया जी लिधौरा के प्रतिष्ठाचार्यत्व में एवं नगर गौरव व्याख्यान वाचस्पति पं. डॉ. श्रेयांस कुमार जैन (दुमदुमा वाले) बड़ौत के मार्गदर्शन में 30 मई 2017 से 4 जून, 2017 तक श्री मज्जिनेन्द्र आदिनाथ जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा गजरथ महोत्सव एवं विश्वशांत महायज्ञ का सानंद सम्पन्न हुआ । इस महोत्सव में अहमदाबाद व टीकमगढ़ क्षेत्र के आस पास के अनेक गांवो के श्रावकों ने पंचकल्याण महोत्सव में पुण्यार्जन किया । कार्यक्रम के सफल संचालन के लिए पंचकल्याणक समिति व मंदिर समिति के समस्त सदस्यों का योगदान रहा । सर्वश्री देवेन्द्र जैन, सत्येन्द्र जैन, मुकेश जैन, प्रसन्न जैन, अखलेश भैया, सत्येन्द्र जैन 'रिंकू', रविन्द्र जैन, पंकज जैन, नवीन जैन, दुमदुमा के अनूप जैन, नितीन जैन, राकेश जैन, रवि जैन व किस्टोन के जितेन्द्र जैन, कुलदीप जैन, जीतू जैन का विशेष सहयोग रहा ।

श्री नवीन-वंदना जैन (दुमदुमावाले)